



Research Article

डॉ. सम्पूर्णानन्द एवं पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

कंचन सैनी^{1*}, डॉ. विनोद भाम्बू²

¹ शोधार्थी, अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान, भारत

² पर्यवेक्षक, सहायक आचार्य, शिक्षा विभाग अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * डॉ. कंचन सैनी

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.22771564>

सारांश

भारतीय शिक्षा-दर्शन के विकास में उन शिक्षाविदों और राष्ट्रनिर्माताओं का विशेष योगदान रहा है जिन्होंने शिक्षा को केवल ज्ञानार्जन अथवा रोजगार प्राप्त करने का माध्यम न मानकर व्यक्ति एवं समाज के व्यापक विकास का साधन माना। पं. मदन मोहन मालवीय और डॉ. सम्पूर्णानन्द इसी परंपरा के दो महत्वपूर्ण व्यक्तित्व हैं। दोनों का चिंतन भारतीय सांस्कृतिक परंपरा, नैतिक मूल्यों, राष्ट्रीय चेतना तथा आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के समन्वय से निर्मित हुआ, किंतु दोनों के शैक्षिक दृष्टिकोण में अपने-अपने समय, अनुभव और सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों के कारण कुछ विशिष्ट भिन्नताएँ भी दिखाई देती हैं।

पं. मदन मोहन मालवीय ने शिक्षा को चरित्र-निर्माण, राष्ट्रनिर्माण, सांस्कृतिक चेतना और आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान के समन्वय का माध्यम माना। दूसरी ओर, डॉ. सम्पूर्णानन्द का शैक्षिक चिंतन भारतीय संस्कृति, संस्कृत, दर्शन, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आधुनिक सामाजिक आवश्यकताओं के समन्वय पर आधारित दिखाई देता है। इस अध्ययन में ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं तुलनात्मक पद्धति के माध्यम से दोनों विचारकों के शैक्षिक दर्शन का विश्लेषण किया गया है।

Manuscript Information

- ISSN No: 3139-6313
- Received: 13-08-2026
- Accepted: 10-09-2026
- Published: 15-09-2026
- IJCRP:1(5); 2026: 37-40
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

सैनी कं, भाम्बू वि, डॉ. सम्पूर्णानन्द एवं पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन. Int. J. Creative Res. Publ. 2026;1(5):37-40.

Access this Article Online



www.jcrp.in

मुख्य शब्द : सम्पूर्णानन्द, मदन मोहन मालवीय, शैक्षिक दर्शन, भारतीय शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा, संस्कृत, चरित्र निर्माण, विज्ञान, संस्कृति।

1. प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी राष्ट्र के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और नैतिक विकास की आधारभूत प्रक्रिया है। भारतीय संदर्भ में शिक्षा की अवधारणा केवल सूचना या कौशल प्राप्त करने तक सीमित नहीं रही है। भारतीय चिंतन में शिक्षा का संबंध व्यक्ति के आंतरिक विकास, आत्मानुशासन, नैतिकता, सामाजिक उत्तरदायित्व और सत्य की खोज से भी जोड़ा गया है। इसी कारण आधुनिक भारत के निर्माण के काल में शिक्षा को लेकर अनेक विचारकों ने अपने विशिष्ट दृष्टिकोण प्रस्तुत किए।

औपनिवेशिक काल में भारतीय शिक्षा व्यवस्था मुख्यतः औपनिवेशिक प्रशासन की आवश्यकताओं से प्रभावित थी। ऐसी परिस्थिति में भारतीय चिंतकों के सामने दोहरी चुनौती थी—एक ओर आधुनिक विज्ञान, तकनीकी ज्ञान और वैश्विक बौद्धिक प्रवृत्तियों को अपनाना और दूसरी ओर भारतीय संस्कृति, भाषा, दर्शन तथा ज्ञान-परंपरा को सुरक्षित रखना। पं. मदन मोहन मालवीय और डॉ. सम्पूर्णानन्द के शैक्षिक चिंतन को इसी ऐतिहासिक संदर्भ में समझना अधिक उपयुक्त है।

मालवीय ने शिक्षा को राष्ट्रीय पुनर्जागरण का प्रमुख साधन माना। उनका शैक्षिक आदर्श बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना में संस्थागत रूप से दिखाई देता है। मालवीय की परिकल्पना में उच्च शिक्षा में कला और विज्ञान के अध्ययन के साथ वैज्ञानिक, तकनीकी एवं व्यावसायिक ज्ञान तथा नैतिक-धार्मिक शिक्षा का समन्वय महत्वपूर्ण था। समकालीन शोध में भी उनके दर्शन को भारतीय ज्ञान-परंपरा और आधुनिक विज्ञान के संयोजन के रूप में रेखांकित किया गया है।

डॉ. सम्पूर्णानन्द का व्यक्तित्व भी शिक्षा, संस्कृति, दर्शन और विज्ञान के बीच समन्वय की दृष्टि से उल्लेखनीय है। वे संस्कृत और भारतीय ज्ञान-परंपरा के विद्वान होने के साथ आधुनिक वैज्ञानिक विषयों में भी रुचि रखते थे। उनके नाम पर वाराणसी में स्थापित सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि यह संकेत देती है कि भारतीय शास्त्रीय ज्ञान को संस्थागत उच्च शिक्षा के साथ जोड़ने की उनकी विशेष रुचि थी। विश्वविद्यालय के आधिकारिक विवरण के अनुसार इसकी स्थापना 22 मार्च 1958 को वाराणसी में हुई और इसके उद्देश्य में भारतीय तथा पश्चिमी दृष्टिकोण के बीच समन्वय तथा संस्कृति एवं आध्यात्मिक साहित्य के अध्ययन-अनुसंधान को महत्व दिया गया।

अतः दोनों व्यक्तित्वों का तुलनात्मक अध्ययन आधुनिक भारतीय शिक्षा के विकास में परंपरा और आधुनिकता के संबंध को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

2. अध्ययन के उद्देश्य

इस अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन का अध्ययन करना।
2. डॉ. सम्पूर्णानन्द के शैक्षिक दर्शन एवं उनके शिक्षा संबंधी विचारों का अध्ययन करना।
3. पं. मदन मोहन मालवीय एवं डॉ. सम्पूर्णानन्द के शैक्षिक दर्शन की समानताओं एवं असमानताओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. साहित्य समीक्षा

1. सिंह, सुनीता (2022) ने एजुकेशनल फिलॉसफी ऑफ मदन मोहन मालवीय में पं. मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन का विस्तृत अध्ययन किया। लेखिका ने उनके शिक्षा संबंधी विचारों में चरित्र निर्माण, नैतिक शिक्षा, राष्ट्रप्रेम, भारतीय संस्कृति तथा आधुनिक वैज्ञानिक शिक्षा के समन्वय को प्रमुखता दी है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मालवीय शिक्षा को व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के साथ-साथ राष्ट्र के सामाजिक एवं सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का माध्यम मानते थे। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध में मालवीय के शैक्षिक दर्शन को समझने के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।
2. पाण्डेय, पार्थ सारथी (2021) ने “भारत रत्न मदन मोहन मालवीय: ए विजनरी एजुकेशनलिस्ट” में मालवीय को दूरदर्शी शिक्षाविद् के रूप में प्रस्तुत किया है। अध्ययन में उनके द्वारा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में किए गए प्रयासों तथा बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के पीछे निहित शैक्षिक उद्देश्यों का विश्लेषण किया गया है। लेखक के अनुसार मालवीय आधुनिक विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा के साथ भारतीय संस्कृति, नैतिकता और राष्ट्रीय मूल्यों को जोड़ने के समर्थक थे। यह अध्ययन मालवीय के शिक्षा-दर्शन के संस्थागत एवं राष्ट्रवादी पक्ष को समझने में उपयोगी है।
3. सिंह, प्रीति एवं बालोदिया, सुनीता (2024) ने “वर्तमान में पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता” में मालवीय के शैक्षिक विचारों की वर्तमान संदर्भ में उपयोगिता का अध्ययन किया। अध्ययन में चरित्र निर्माण, नैतिक शिक्षा, राष्ट्रप्रेम, भारतीय संस्कृति तथा मूल्यपरक शिक्षा को विशेष महत्व दिया गया है। लेखिकाओं ने यह स्पष्ट किया कि वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में बढ़ती भौतिकता और नैतिक चुनौतियों के बीच मालवीय के शैक्षिक विचार आज भी प्रासंगिक हैं। प्रस्तुत शोध के लिए यह अध्ययन मालवीय के विचारों की समकालीन प्रासंगिकता निर्धारित करने में सहायक है।
4. चौधरी, विक्रम एवं सिंह, जयप्रकाश (2025) ने “पंडित मदन मोहन मालवीय की शैक्षिक दृष्टि और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ उसकी संगति” में मालवीय के शिक्षा संबंधी विचारों तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच समानताओं का विश्लेषण किया। अध्ययन में भारतीय ज्ञान-परंपरा, मातृभाषा, कौशल विकास, मूल्यपरक शिक्षा, बहुविषयक अध्ययन तथा भारतीय संस्कृति के संरक्षण जैसे पक्षों को रेखांकित किया गया है। यह अध्ययन वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में मालवीय के विचारों की प्रासंगिकता को स्पष्ट करता है।
5. सम्पूर्णानन्द के शैक्षिक विचारों के संदर्भ में उपलब्ध जीवन-वृत्तात्मक एवं संस्थागत सामग्री से स्पष्ट होता है कि उनका चिंतन भारतीय संस्कृति, संस्कृत, दर्शन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के समन्वय पर आधारित था। संस्कृत एवं भारतीय ज्ञान-परंपरा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के साथ-साथ विज्ञान और विशेष रूप से खगोल-विज्ञान में उनकी रुचि उनके व्यापक ज्ञान-दृष्टिकोण को प्रदर्शित करती है। वाराणसी स्थित सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना और उसके शैक्षिक उद्देश्यों में भारतीय एवं पश्चिमी दृष्टिकोण के समन्वय पर बल उनके शैक्षिक चिंतन की संस्थागत अभिव्यक्ति के रूप में देखा जा सकता है। इस दृष्टि

से सम्पूर्णानन्द का अध्ययन भारतीय परंपरा और आधुनिक ज्ञान के बीच संबंध को समझने में महत्वपूर्ण है।

4. पं. मदन मोहन मालवीय का शैक्षिक दर्शन

मालवीय के लिए शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा उत्तीर्ण करना या जीविका अर्जित करना नहीं था। शिक्षा का अंतिम उद्देश्य ऐसे व्यक्तियों का निर्माण करना था जो चरित्रवान, उत्तरदायी, राष्ट्रप्रेमी और समाजोपयोगी हों।

उनके शिक्षा-दर्शन में चरित्र निर्माण को केंद्रीय स्थान प्राप्त था। वे ज्ञान को नैतिकता से अलग करके देखने के पक्षधर नहीं थे। आधुनिक अध्ययन भी यह दर्शाते हैं कि उनके उच्च शिक्षा संबंधी विचारों में चरित्र निर्माण, धर्म एवं नैतिकता को शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में देखा गया।

मालवीय का मानना था कि शिक्षा का संबंध विद्यार्थी की सांस्कृतिक जड़ों से होना चाहिए। भारतीय इतिहास, साहित्य, संस्कृत, धर्म, दर्शन और संस्कृति के अध्ययन को वे राष्ट्रीय आत्मबोध के लिए आवश्यक मानते थे।

मालवीय आधुनिक विज्ञान के विरोधी नहीं थे। इसके विपरीत वे विज्ञान और तकनीकी शिक्षा को भारत की आर्थिक प्रगति तथा औद्योगिक विकास के लिए आवश्यक मानते थे। उनकी दृष्टि में भारतीय युवाओं को ऐसा ज्ञान प्राप्त होना चाहिए जिससे वे देश की आर्थिक समस्याओं का समाधान कर सकें और स्वदेशी उद्योगों के विकास में योगदान दे सकें। आधुनिक शोध भी मालवीय के शिक्षा-दर्शन में वैज्ञानिक, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा के महत्व को रेखांकित करता है। मालवीय के शैक्षिक दर्शन में धर्म का अर्थ केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं था। नैतिक जीवन, आत्मसंयम, कर्तव्यबोध और चरित्र निर्माण से इसका गहरा संबंध था।

मालवीय का शिक्षा-दर्शन राष्ट्रीय चेतना से गहराई से जुड़ा हुआ था। वे शिक्षा के माध्यम से ऐसे नागरिक तैयार करना चाहते थे जो व्यक्तिगत हित से ऊपर उठकर राष्ट्र और समाज के प्रति उत्तरदायित्व निभाएँ।

5. डॉ. सम्पूर्णानन्द का शैक्षिक दर्शन

डॉ. सम्पूर्णानन्द के शैक्षिक चिंतन को समझने के लिए उनके विद्वतापूर्ण व्यक्तित्व, भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी प्रतिबद्धता तथा आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टि को एक साथ देखना आवश्यक है।

वे संस्कृत और भारतीय दर्शन के गंभीर अध्येता थे तथा विज्ञान, विशेषकर खगोल-विज्ञान में भी उनकी रुचि थी। उपलब्ध जीवन-वृत्त संबंधी स्रोत उन्हें संस्कृत एवं खगोल-विज्ञान का विद्वान बताते हैं।

सम्पूर्णानन्द भारतीय ज्ञान-परंपरा को शिक्षा का महत्वपूर्ण आधार मानते थे। उनके शैक्षिक चिंतन में संस्कृत, दर्शन, भारतीय संस्कृति और प्राचीन ज्ञान को आधुनिक शिक्षा से जोड़ने की प्रवृत्ति दिखाई देती है।

उनके नाम पर स्थापित संस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना इसी व्यापक शैक्षिक दृष्टि का संस्थागत उदाहरण है। विश्वविद्यालय के आधिकारिक विवरण में भारतीय एवं पश्चिमी दृष्टिकोण के बीच समन्वय और भारतीय संस्कृति तथा आध्यात्मिक साहित्य के अध्ययन पर बल दिया गया है।

सम्पूर्णानन्द का व्यक्तित्व केवल परंपरावादी नहीं था। उनकी वैज्ञानिक रुचि विशेष रूप से उल्लेखनीय थी। संस्कृत और भारतीय

दर्शन के साथ खगोल-विज्ञान में उनकी रुचि यह संकेत देती है कि वे ज्ञान को परस्पर पृथक खाँचों में देखने के बजाय व्यापक बौद्धिक दृष्टि से देखते थे।

सम्पूर्णानन्द के शैक्षिक चिंतन की एक महत्वपूर्ण विशेषता संस्कृत शिक्षा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता थी। संस्कृत को वे भारतीय सांस्कृतिक एवं दार्शनिक ज्ञान तक पहुँचने का महत्वपूर्ण माध्यम मानते थे।

सम्पूर्णानन्द शिक्षा को व्यापक सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानते थे। शिक्षा व्यक्ति को केवल विद्वान बनाने के बजाय सामाजिक उत्तरदायित्व, नैतिक चेतना और राष्ट्रीय जीवन के प्रति सजग बनाने वाली प्रक्रिया होनी चाहिए—यह उनके चिंतन की प्रमुख प्रवृत्ति थी।

6. निष्कर्ष

अतः तुलनात्मक दृष्टि से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि मालवीय और सम्पूर्णानन्द दोनों के शिक्षा-दर्शन का मूल आधार भारतीय सांस्कृतिक चेतना, नैतिकता, ज्ञान की व्यापकता और आधुनिकता के साथ समन्वय है। अंतर मुख्यतः उनके चिंतन के जोर और कार्यक्षेत्र में दिखाई देता है। मालवीय का दृष्टिकोण राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, उच्च शिक्षा और राष्ट्रनिर्माण की संस्थागत आवश्यकताओं पर अधिक केंद्रित था, जबकि सम्पूर्णानन्द का दृष्टिकोण भारतीय शास्त्रीय ज्ञान, संस्कृत, दर्शन और आधुनिक वैज्ञानिक चेतना के वैचारिक-सांस्कृतिक समन्वय की ओर अधिक उन्मुख था।

संदर्भ सूची

1. सिंह सुनीता. एजुकेशनल फिलॉसफी ऑफ मदन मोहन मालवीय. नई दिल्ली: अटलांटिक पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स; 2022.
2. पाण्डेय पार्थ सारथी. भारत रत्न मदन मोहन मालवीय: ए विजनरी एजुकेशनलिस्ट. टेक्नोलॉर्न: एन इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी. 2021;11(2):123-128.
3. सिंह प्रीति, बालोदिया सुनीता. वर्तमान में पंडित मदन मोहन मालवीय के शैक्षिक दर्शन की प्रासंगिकता. शोधकोश: जर्नल ऑफ विजुअल एंड परफॉर्मिंग आर्ट्स. 2024;5(3).
4. चौधरी विक्रम, सिंह जयप्रकाश. पंडित मदन मोहन मालवीय की शैक्षिक दृष्टि और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के साथ उसकी संगति. Int J Sci Res Publ. 2025;15(12):245-250.
5. मालवीय मदन मोहन. मालवीय जी के शैक्षिक एवं राष्ट्रीय विचार: संकलित लेख एवं भाषण. वाराणसी: संबंधित प्रकाशन.
6. सम्पूर्णानन्द डॉ. भारतीय संस्कृति और शिक्षा संबंधी विचार. वाराणसी: संबंधित प्रकाशन.
7. सम्पूर्णानन्द डॉ. भारतीय दर्शन एवं संस्कृति. वाराणसी: नागरी प्रचारिणी सभा.
8. मालवीय मदन मोहन. भारत में शिक्षा और राष्ट्रनिर्माण संबंधी विचार. वाराणसी: बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से संबंधित प्रकाशन.

9. राधाकृष्णन एस. विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की रिपोर्ट. नई दिल्ली: भारत सरकार; 1948.
10. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. नई दिल्ली: भारत सरकार; 2020.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution-Non-Commercial-No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the author



कंचन सैनी अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान में शोधार्थी हैं। वे शिक्षा एवं संबंधित अकादमिक क्षेत्रों में शोध कार्य कर रही हैं। उनका शोध शैक्षिक प्रक्रियाओं, शिक्षण-अधिगम तथा समकालीन शैक्षिक विषयों के अध्ययन पर केंद्रित है। वे शोध के माध्यम से शिक्षा के क्षेत्र में नवीन एवं उपयोगी दृष्टिकोण विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

डॉ. विनोद भाम्बू शिक्षा विभाग, अपेक्स यूनिवर्सिटी, जयपुर, राजस्थान में सहायक आचार्य के पद पर कार्यरत हैं। वे शिक्षण, शोध एवं अकादमिक मार्गदर्शन से जुड़े हैं। उनका शैक्षिक एवं शोध कार्य शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों पर केंद्रित है तथा वे शोधार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शोध कार्य के लिए मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।